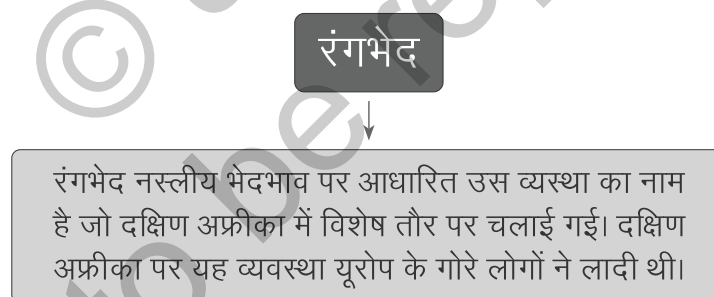
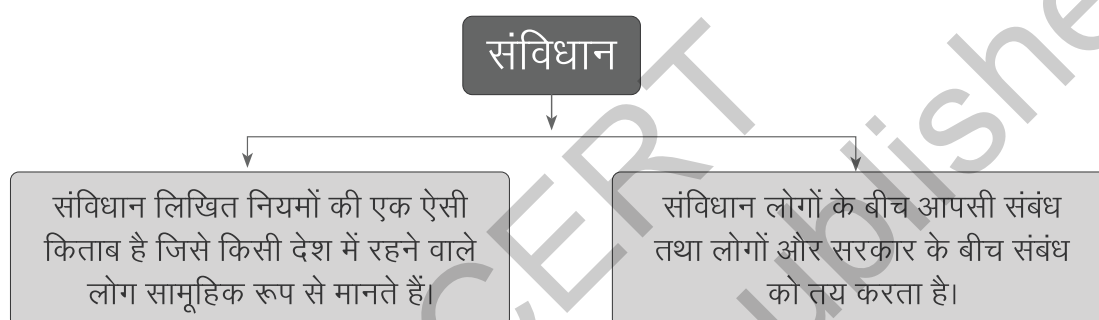


संविधान निर्माण



17 वीं और 18 वीं शताब्दी में व्यापार करने आई हीरों की कंपनियों ने दक्षिण अफ्रीका को गुलाम बनाया और काफी बड़ी संख्या में यहां गोरे लोग बस गए और यहां के स्थानीय काली चमड़ी वाले लोगों के साथ रंगभेद शुरू कर दिया।

रंगभेद की नीति के अंतर्गत अश्वेतों पर प्रतिबंध

गोरों को बस्तियों में बसने की इजाजत नहीं थी।

परमिट होने पर ही वहां काम करने जा सकते हैं।

काले लोग गोरों के लिए आरक्षित स्थानों पर नहीं जा सकते थे, इसमें गोरों के गिरजाघर भी सम्मिलित थे।

अश्वेतों को संगठन बनाने और इस भेदभाव पूर्ण व्यवहार का विरोध करने का भी अधिकार नहीं था।

रंगभेद के खिलाफ संघर्ष

अफ्रीकी नेशनल कांग्रेस के झंडे तले दक्षिण अफ्रीका ने 1950 ई से ही गोरों के विरुद्ध आजादी की लड़ाई लड़ी। अखिरकार 26 अप्रैल 1994 ईस्वी को दक्षिण अफ्रीका गणराज्य का नया झंडा लहराया और यह एक लोकतांत्रिक देश बन गया।

यूरोपिय अल्पसंख्यक गोरों की सरकार काले लोगों पर अत्याचार करती रही।

दक्षिण अफ्रीकी नेता नेल्सन मंडेला ने रंगभेद से चलने वाली शासन की व्यवस्था के विरुद्ध आवाज उठाई।

अफ्रीकी नेशनल कांग्रेस झंडे तले गोरों के विरुद्ध मजदूर संघठन और कम्युनिस्ट पार्टी भी शामिल थे।

1994 ईस्वी में चुनाव की घोषणा की गई जिसमें लोकप्रिय अफ्रीकी नेता नेल्सन मंडेला की जीत हुई और उन्हें स्वतंत्र दक्षिण अफ्रीका का पहला राष्ट्रपति चुना गया।

नेल्सन मंडेला का संघर्ष

नेल्सन मंडेला पर देशद्रोह के आधार पर मुकदमा चलाया गया।

नेल्सन मंडेला को 7 अन्य नेताओं सहित 1964 ईस्वी में देश में रंगभेद से चलने वाली शासन व्यवस्था का विरोध करने के लिए आजीवन कारावास की सजा दी गई। वह 28 वर्षों तक दक्षिण अफ्रीका की सबसे भयावह जेल रोबेन द्वीप की जेल में रहे।

नेल्सन मंडेला द्वारा लिखित आत्मकथा का नाम— “द लांग वॉक टू फ्रीडम” है।

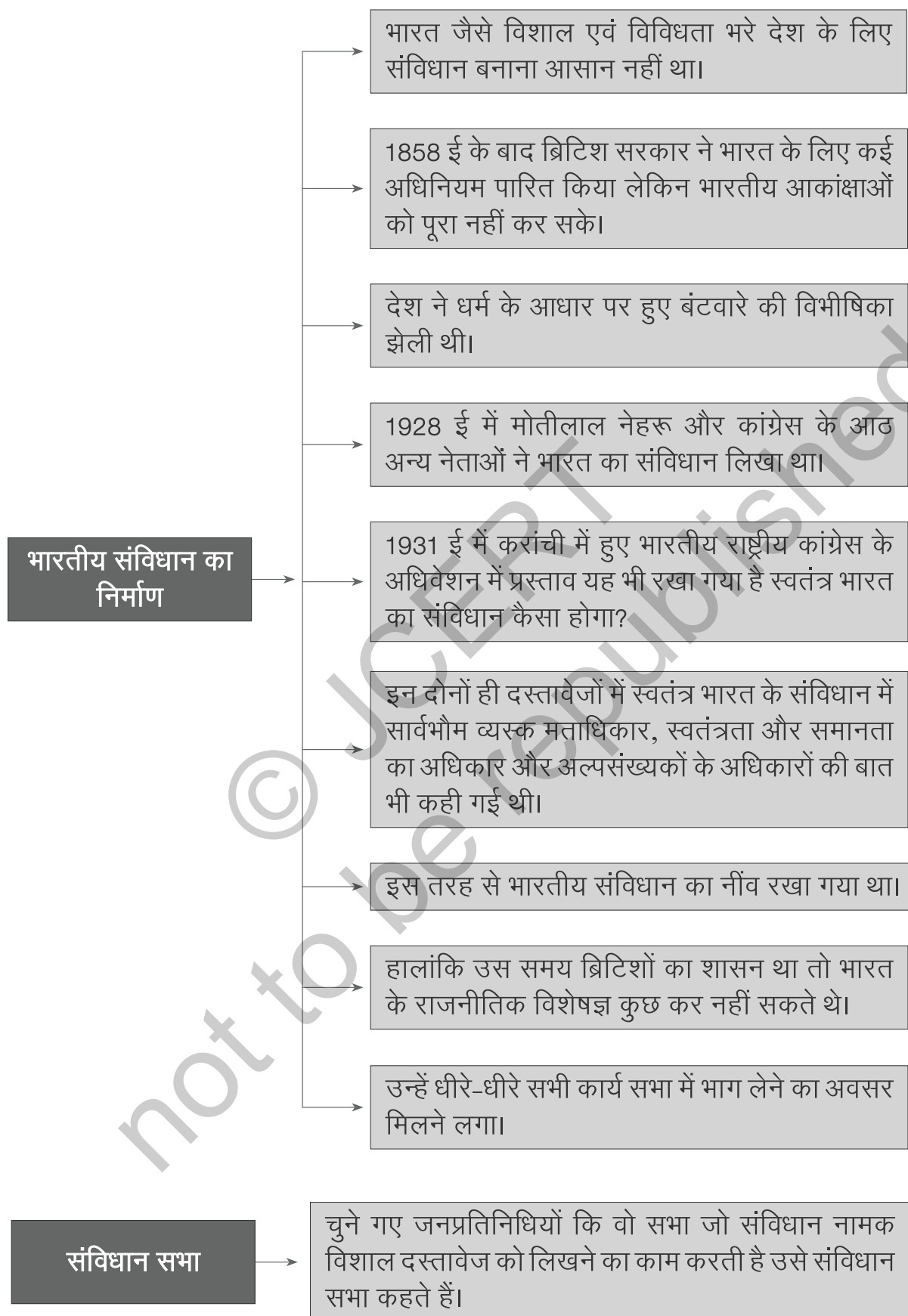
अफ्रीका का संविधान

अफ्रीका का संविधान इतिहास और भविष्य दोनों की बातें करता है एक तरफ तो यह एक पवित्र समझौता है कि दक्षिण अफ्रीकी के रूप में हम एक दूसरे से यह वादा करते हैं कि हम अपने रंगभेदी क्रूर और दमनकारी इतिहास को फिर से दोहराने की अनुमति नहीं देंगे।

यह अपने देश को इसके सभी लोगों द्वारा वास्तविक अर्थों में साझा करने का घोषणा पत्र भी है। श्वेत और अश्वेत, स्त्री और पुरुष यह देश पूर्ण रूप से हम सभी का है।

2 वर्षों की चर्चा की चर्चा और बहस के बाद 1994 ईस्वी तक जिस देश की दुनिया भर में लोकतांत्रिक तौर-तरीकों के लिए निंदा की जाती थी आज उससे लोकतंत्र के मॉडल के रूप में देखा जाता है।





भारतीय संविधान सभा

भारतीय संविधान सभा के लिए जुलाई 1946 ईस्वी में चुनाव हुए।

संविधान सभा की पहली बैठक 9 दिसंबर 1946 ई में हुई थी।

इसके तत्काल बाद देश दो हिस्सों भारत और पाकिस्तान में बँट गया।

संविधान सभा भी दो हिस्सों में बँट गई— भारत की संविधान सभा और पाकिस्तान की संविधान सभा।

भारत का संविधान लिखने वाली सभा में 299 सदस्य थे, जिन्होंने 26 नवंबर 1949 में अपना कार्य पूरा कर लिया।

संविधान सभा के प्रारूप समिति के अध्यक्ष डॉक्टर भीमराव अंबेडकर ने चर्चा के लिए एक प्रारूप संविधान बनाया।

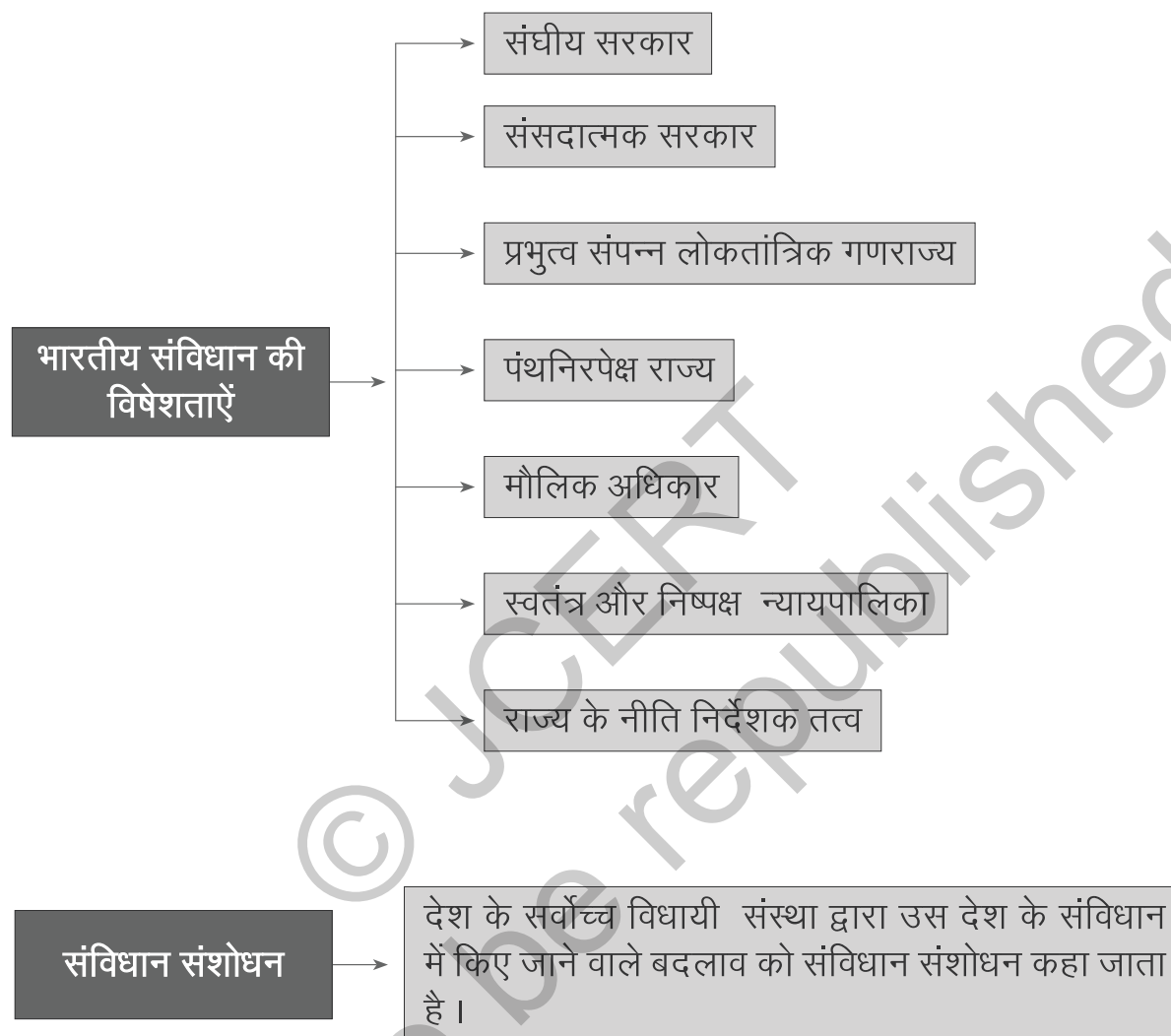
प्रत्येक धारा पर दो हजार से ज्यादा संशोधनों पर चर्चा हुआ।

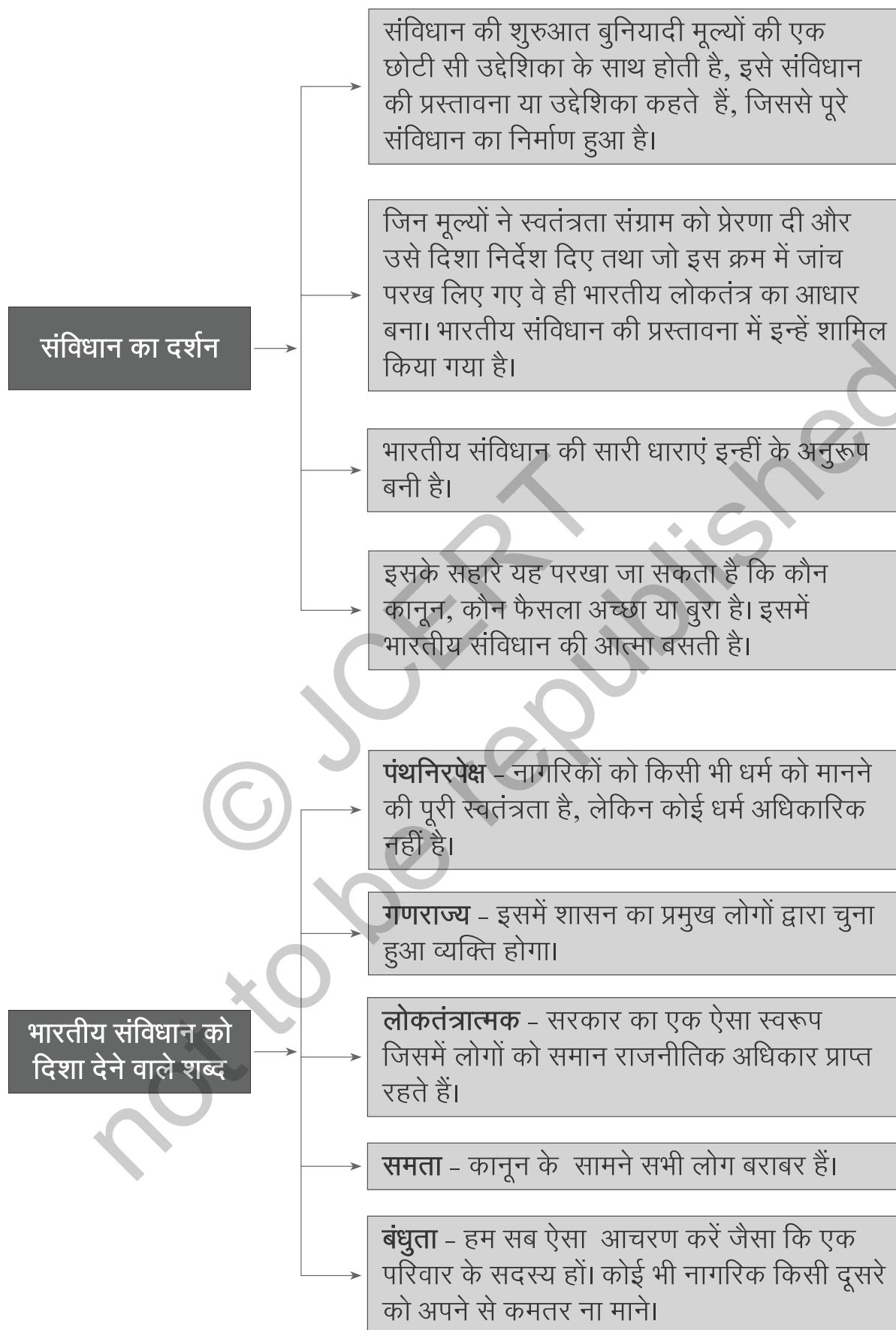
2 वर्ष 11 माह 18 दिन में कुल 114 दिनों की गंभीर चर्चा हुई और चर्चा को भी रिकॉर्ड किया गया और संभाला गया।

इन्हें Constituent Assembly Debates नाम से 12 मोटे खंडों में प्रकाशित किया गया।

इन्हीं बहसों से हर प्रावधान के पीछे की सोच और तर्क समझा जा सकता है।

26 जनवरी 1950 ईस्वी को भारतीय संविधान लागू हुआ इसलिए इस दिन को गणतंत्र दिवस के रूप में मनाते हैं।





अभ्यास प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. भारतीय संविधान सभा की पहली बैठक कब हुई थी?

- a. अप्रैल 1942
- b. दिसंबर 1928
- c. दिसंबर 1946
- d. दिसंबर 1950

प्रश्न 2. रंगभेद के खिलाफ लंबी लड़ाई लड़ने वाले दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य कब स्वतंत्र हुआ?

- a. 26 अप्रैल 1994
- b. 26 अप्रैल 1990
- c. 28 अप्रैल 1986
- d. 27 अप्रैल 1996

प्रश्न 3. प्रारूप समिति के अध्यक्ष कौन थे?

- a. जवाहरलाल नेहरू
- b. डॉ राजेंद्र प्रसाद
- c. भीमराव अंबेडकर
- d. बल्लभ भाई पटेल

प्रश्न 4. भारतीय संविधान कब लागू हुआ?

- a. 26 जनवरी 1950
- b. 26 जनवरी 1949
- c. 15 अगस्त 1947
- d. 28 जनवरी 1948

प्रश्न 5. भारतीय संविधान लिखने वाली संविधान सभा में कुल कितने सदस्य थे?

- a. 299
- b. 221
- c. 255
- d. 267

लघु उत्तरीय प्रश्न

- प्रश्न 6.** नेल्सन मंडेला को किस आधार पर मुकदमा चलाया गया था वे कितने वर्षों तक जेल में रहे?
- प्रश्न 7.** भारतीय संविधान बनकर कब पूरा हुआ और इसे कब लागू किया गया?
- प्रश्न 8.** दक्षिण अफ्रीका को लोकतांत्रिक संविधान बनाने में कौन-कौन से टकराव का सामना करना पड़ा?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

- प्रश्न 9.** रंगभेद की नीति के अंतर्गत अश्वेतों पर क्या क्या प्रतिबंध थे?
- प्रश्न 10.** भारत एक पंथनिरपेक्ष राज्य है। कैसे?

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न - उत्तर

- प्रश्न 1.** यहां कुछ असत्य कथन दिए गए हैं। प्रत्येक मामले में गलती की पहचान करें और इस अध्याय में आपने जो पढ़ा है उसके आधार पर उन्हें सही ढंग से फिर से लिखें।
- A. स्वतंत्रता आंदोलन के नेताओं के पास इस बारे में खुला दिमाग था कि आजादी के बाद देश को लोकतांत्रिक होना चाहिए या नहीं
 - B. भारत की संविधान सभा के सदस्यों ने संविधान के सभी प्रावधानों पर समान विचार रखे।
 - C. जिस देश का संविधान है, वह लोकतंत्र होना चाहिए।
 - D. संविधान में संशोधन नहीं किया जा सकता क्योंकि यह किसी देश का सर्वोच्च कानून है।
- उत्तर—A.** स्वतंत्रता आंदोलन के नेताओं का स्वतंत्रता के बाद देश के लोकतांत्रिक होने के बारे में खुला दिमाग था।
- B. संविधान सभा के सदस्यों ने उनके बीच मतभेदों को सुलझाने के लिए व्यवस्थित खुले और सहमति से काम किया।
 - C. यह आवश्यक नहीं है कि संविधान वाला देश लोकतंत्र होना चाहिए। किसी देश का संविधान तानाशाही या राजशाही का प्रावधान भी कर सकता है। उदाहरण सोवियत संघ और पाकिस्तान।

- D. समाज की आकांक्षा में बदलाव को बनाए रखने के लिए एक संविधान में संशोधन किया जा सकता है। इसे देश की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए बदला भी जा सकता है।

प्रश्न 2. इनमें से कौन सा दक्षिण अफ्रीका में एक लोकतांत्रिक संविधान के निर्माण में सबसे प्रमुख अंतर्निहित संघर्ष था?

- A. दक्षिण अफ्रीका और उसके पड़ोसियों के बीच
- B. पुरुषों और महिलाओं के बीच
- C. सफेद बहुमत और काले अल्पसंख्यक के बीच
- D. रंगीन अल्पसंख्यक और काले बहुमत के बीच

उत्तर—C. सफेद बहुमत और काले रंग के बीच अल्पसंख्यक

प्रश्न 3. इनमें से कौन सा ऐसा प्रावधान है जो एक लोकतांत्रिक संविधान में नहीं है?

- A. राज्य के मुखिया की शक्तियां
- B. राज्य के प्रमुख का नाम
- C. विधायिका की शक्तियां
- D. देश का नाम

उत्तर—B. राज्य के प्रमुख का नाम

प्रश्न 4. निम्नलिखित नेताओं को संविधान के निर्माण में उनकी भूमिकाओं के साथ सुमेलित कीजिए:

- | | |
|--------------------|---|
| A. मोतीलाल नेहरू | 1. संविधान सभा के अध्यक्ष |
| B. बीआर अंबेडकर | 2. संविधान सभा के सदस्य |
| C. राजेंद्र प्रसाद | 3. मसौदा समिति के अध्यक्ष |
| D. सरोजिनी नायडू | 4. 1928 में भारत के लिए एक संविधान तैयार किया |

उत्तर—A. मोतीलाल नेहरू

4. 1928 में भारत के लिए एक संविधान तैयार किया

- | | |
|--------------------|---------------------------|
| B. बीआर अंबेडकर | 3. मसौदा समिति के अध्यक्ष |
| C. राजेंद्र प्रसाद | 1. संविधान सभा के अध्यक्ष |
| D. सरोजिनी नायडू | 2. संविधान सभा के सदस्य |

प्रश्न 5. नेहरू के भाषण “ट्रिस्ट विद डेस्टिनी” के अंश फिर से पढ़ें और निम्नलिखित का उत्तर दें:

- A. नेहरू ने पहले वाक्य में पूर्ण रूप से या पूर्ण रूप से अभिव्यक्ति का उपयोग क्यों नहीं किया?
- B. वे भारतीय संविधान के निर्माताओं से क्या प्रतिज्ञा लेना चाहते थे?
- C. “हमारी पीढ़ी के सबसे महान व्यक्ति की महत्वाकांक्षा हर आंख से हर आंसू पहुंचने की रही है”। वह किसका जिक्र कर रहा था?

उत्तर (A) पहले वाक्य में अभिव्यक्ति ‘पूर्ण रूप से या पूर्ण रूप से नहीं’ का प्रयोग नेहरू द्वारा किया गया था क्योंकि उन्होंने सोचा था कि उन्होंने जो कार्य किया था वह अधूरा था और प्रतिज्ञाओं को एक साथ पूरा करना संभव नहीं था लेकिन होगा धीरे-धीरे पूरा किया।

(B) वह भारतीय संविधान के निर्माताओं से जो प्रतिज्ञा लेना चाहते थे, वह भारत, भारतीयों और व्यापक रूप से मानवता की सेवा के लिए अपना जीवन समर्पित करना था।

C. वह महात्मा गांधी का जिक्र कर रहा था।

प्रश्न 6. यहां संविधान के कुछ मार्गदर्शक मूल्य और उनके अर्थ दिए गए हैं। उन्हें सही ढंग से मिलान करके फिर से लिखें।

- A. संप्रभु 1. सरकार किसी धर्म का पक्ष नहीं लेगी
- B. गणराज्य 2. लोगों को निर्णय लेने का सर्वोच्च अधिकार है।
- C. बंधुत्व 3. राज्य का मुखिया एक निर्वाचित व्यक्ति होता है।
- D. धर्मनिरपेक्ष 4. लोगों को भाइयों और बहनों की तरह रहना चाहिए।

उत्तर—A. संप्रभु 2. लोगों को निर्णय लेने का सर्वोच्च अधिकार है

B. गणराज्य 3. राज्य का मुखिया एक निर्वाचित व्यक्ति होता है

C. बंधुत्व 4. लोगों को भाइयों और बहनों की तरह रहना चाहिए

D. धर्मनिरपेक्ष 1. सरकार किसी धर्म का पक्ष नहीं लेगी।

प्रश्न 7. नेपाल के एक मित्र ने आपको वहां राजनीतिक अभ्यास की स्थिति का वर्णन करते हुए एक पत्र लिखा है। कई राजनीतिक दल राजा के शासन का विरोध कर रहे हैं उनमें से कुछ का कहना है कि निर्वाचित प्रतिनिधियों को अधिक अधिकार देने के

लिए सम्राट द्वारा दिए गए मौजूदा संविधान में संशोधन किया जा सकता है। अन्य लोग गणतंत्रात्मक संविधान लिखने के लिए एक नई संविधान सभा की मांग करते हैं इस विषय पर अपनी राय देते हुए अपने मित्र को उत्तर दें।

उत्तर— प्रिय अभिनव,

मैंने आपका पत्र पढ़ा यह वास्तव में आपके लिए रोमांचक समय है। मेरा देश लगभग 75 वर्षों से स्वतंत्र है और हम पहले ही लोकतंत्र की स्थापना की पूरी प्रक्रिया से गुजर चुके हैं। 100 भाग से यह इस मिट्टी पर भी बच गया है, मुझे उम्मीद है कि नेपाल में भी ऐसा ही होगा।

मैं अपने आप को आशान्वित पाता हूँ कि नहीं संविधान सभा की मांग नेपाल में जोर पकड़ लेगी। एक गणतान्त्रिक संविधान के अपने फायदे हैं जो आप जानते हैं। आपके और मेरे जैसे देशों में सरकारी खर्च के मामले में पहले से ही बहुत ज्यादा अपव्यय है। दुर्भाग्य से यह हमारी राष्ट्रीय संस्कृति की वास्तविकता है। इसके अलावा नेपाल के संवैधानिक राजतंत्र है तो रॉयल्टी के लिए उच्च जीवन स्तर बनाए रखने के लिए बहुत पैसा खर्च करना पड़ता होगा। ब्रिटेन में एक संवैधानिक राजतंत्र है, लेकिन वह इससे वहन भी कर सकता है। हालांकि मेरी राय में भारत और नेपाल जैसे देशों के लिए एक रिपब्लिकन सरकार सबसे उपयुक्त है।

इस तरह से आपके राजा द्वारा पेश किया गया संविधान शायद ही लोकतान्त्रिक कहा जा सकता है। यह शायद ही आप की संसद या नागरिक सरकार को कोई शक्ति देता है ऐसा मैंने सुना है। फिर भी मैं विदेशी के रूप में कुछ भी सोच सकता हूँ। नेपाल के लोग आपके देश के राजनीतिक भविष्य के सर्वश्रेष्ठ न्यायाधीश होंगे। चलिए देखते हैं आगे क्या होता है?

मैंने सुना है कि माओवादी नेपाल के ग्रामीण इलाकों में फिर से कुछ पैठ बना रहे हैं। मैं व्यक्तिगत रूप से किसी भी हिंसा का समर्थन नहीं करता हूँ, और लोकतंत्र में विश्वास रखता हूँ। भारत के प्रति उनका क्या रवैया है? वे चीनियों के बारे में क्या सोचते हैं। मुझे बताएं कि आप क्या सोचते हैं?

आपका दोस्त
ए.बी.सी

प्रश्न 8. हां भारत को लोकतंत्र बनाने के बारे में अलग-अलग राय दी गई है। आप इनमें से प्रत्येक कार्य को कितना महत्व देंगे?

A. भारत में लोकतंत्र ब्रिटिश शासकों का एक उपहार है। हमें ब्रिटिश शासन के तहत प्रतिनिधि विधायी संस्थानों के साथ काम करने का प्रशिक्षण मिला।

- B. स्वतंत्रता संग्राम ने औपनिवेशिक शोषण और भारतीयों को विभिन्न स्वतंत्रताओं से वंचित करने को चुनौती दी। आजाद भारत कुछ और नहीं बल्कि लोकतांत्रिक हो सकता है।
- C. हम भाग्यशाली थे कि हमें ऐसे नेता मिले जिनके पास लोकतांत्रिक विश्वास था। कई अन्य नए स्वतंत्र देशों में लोकतंत्र का खंडन इन नेताओं की महत्वपूर्ण भूमिका को दर्शाता है।

उत्तर-A. हालांकि मैं स्वीकार करता हूँ कि ब्रिटिश शासकों और लोकतंत्र उनमें से एक होने के कारण कई अच्छी चीजें सीखी गई, मैं यह नहीं कहूंगा कि लोकतंत्र उनके द्वारा दिया गया उपहार था। ब्रिटिश शासन से आजादी पाने के लिए भारतीयों को बहुत संघर्ष करना पड़ा और कई बलिदान देने पड़े। इन परिस्थितियों ने लोगों को विधायी संस्थानों के कामकाज में अनुभव और प्रशिक्षण प्राप्त करने में मदद की।

- B. हां, स्वतंत्र भारत लोकतांत्रिक के अलावा और कुछ नहीं हो सकता क्योंकि लोगों ने पहले ही ब्रिटिश शासन के तहत बहुत कुछ झेला था। इससे उन्हें एहसास हुआ कि देश पर शासन करने में लोगों की भागीदारी के लिए भारत को एक लोकतांत्रिक देश बनाना आवश्यक है।
- C. यह वास्तव में सच है कि हम भाग्यशाली थे कि हमारे पास ऐसे नेता थे जिनके पास गहरे लोकतांत्रिक मूल्य थे। इन्हीं आदर्शों के कारण ही भारत के स्वतंत्रता संग्राम को समकालीन इतिहास में रक्त हीन स्वतंत्रता संग्राम का एकमात्र उदाहरण माना जा सकता है। इसलिए ऐसे आदर्शों की अनुपस्थिति ने कई देशों को और अलोकतांत्रिक बना दिया है।

प्रश्न— 9 1912 में प्रकाशित 'विवाहित महिलाओं' के लिए एक आचरण पुस्तक से निम्नलिखित उद्धरण पढ़ें। 'भगवान ने औरत जाति को शारीरिक और भावनात्मक रूप से नाजुक बनाया है। आत्मरक्षा के लिए शारीरिक रूप से अक्षम है। इस प्रकार परमेश्वर द्वारा नियत की गई है कि वह अपने पूरे जीवन पिता पति और पुत्र के पुरुष संरक्षण में रहे।

इसलिए महिलाओं को निराश नहीं होना चाहिए बल्कि यह महसूस करना चाहिए कि वह पुरुषों की सेवा के लिए खुद को समर्पित कर सकती हैं। क्या आपको लगता है कि इस पैरा में व्यक्त मूल्य हमारे संविधान में निहित मुद्दों को दर्शाते हैं? या यह संवैधानिक मूल्यों के खिलाफ है?

उत्तर— दिया गया पैराग्राफ हमारे संविधान में अंतर्निहित मूल्य को नहीं दर्शाता है। यह पितृसत्तात्मक विचारों को संदर्भित करता है और लिंग में असमानता के विचार का समर्थन करता है।

यह संवैधानिक मूल्यों के खिलाफ जाता है क्योंकि अनुच्छेद में महिलाओं को हीन, आत्मरक्षा में कमजोर और नाजुक के रूप में दिखाया गया है जिनको पुरुषों की सेवा करनी चाहिए।

हालांकि संविधान ने महिलाओं को समान अधिकार प्रदान किए हैं। उन्हें वोट देने का अधिकार है, यह कोई भी नौकरी कर सकते हैं और उन्हें समान काम के लिए समान वेतन दिया जाता है

प्रश्न 10. संविधान के बारे में निम्नलिखित कथनों को पढ़ें। कारण दीजिए कि इनमें से प्रत्येक सत्य है या नहीं।

- A. संविधान के नियमों का अधिकार किसी अन्य कानून के समान है।
- B. संविधान बताता है कि सरकार के विभिन्न रंगों का गठन कैसे किया जाएगा।
- C. नागरिकों के अधिकार और सरकार की शक्ति पर सीमाएं संविधान में निर्धारित की गई हैं।
- D. एक संविधान संस्थानों के बारे में मूल्यों के बारे में नहीं।

उत्तर— A. सच नहीं है। एक साधारण कानून संसद द्वारा पारित किया जाता है और इसे अपनी इच्छा से बदला जा सकता है। दूसरी ओर संविधान के नियमों को अधिक अधिकार हैं और संसद को उनका पालन करना है। इन नियमों में संशोधन के लिए एक विशेष प्रक्रिया अपनानी होगी।

- B. सच है। संविधान ने सरकार गठन की रूपरेखा निर्धारित की है। इसमें सरकार के 3 अंगों अर्थात् कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका की संरचना शक्ति और कार्यों को स्थापित किया है।
- C. सच है। नागरिकों के अधिकारों को संविधान में मौलिक अधिकारों के रूप में निर्धारित किया गया है। जो कानून द्वारा प्रवर्तनीय है। सरकार की शक्तियों और कार्यों को कार्यपालिका, विधायी और न्यायपालिका में विभाजित किया गया है। यह सरकार की शक्ति के कामकाज को सुनिश्चित करने के लिए प्रत्येक अंग को अन्य अंगों द्वारा जांच में रखने के लिए किया जाता है।

- D. सच नहीं है। संविधान देश का सर्वोच्च कानून है। यह सरकार के विभिन्न संस्थानों की संरचना शक्तियों और कार्यों को निर्धारित करता है। संविधान उन मूल्यों द्वारा निर्देशित होता है, जो प्रस्तावना के रूप में पाए जाते हैं। समानता, स्वतंत्रता, बंधुत्व, भाईचारा, धर्मनिरपेक्षता और न्याय जैसे सिद्धांत और मूल्य संविधान की प्रस्तावना में शामिल हैं।

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

- प्रश्न 1.** दिसंबर 1946
- प्रश्न 2.** 26 अप्रैल 1994
- प्रश्न 3.** डॉक्टर भीमराव अंबेडकर
- प्रश्न 4.** 26 जनवरी 1950
- प्रश्न 5.** 299